श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

दिव्यास्त्रविमर्शिनी

हिन्दी अनुवाद सहित

लेखक

श्रीभागवतानंद गुरु

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित

NOTION PRESS

NOTION PRESS
India. Singapore. Malaysia.
ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

First Pubished – 2020
Second Edition - 2021

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references [“Content”]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

All Rights Reserved - Author

श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

दिव्यास्त्रविमर्शिनी

हिन्दी अनुवाद सहित

लेखक

श्रीभागवतानंद गुरु

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित
NOTION PRESS

धर्मसंरक्षणार्थायाधर्मसंहारहेतवे ।
निग्रहाणाञ्च धर्माज्ञा लोके लोके प्रवर्धताम् ॥



निग्रहाचार्य श्रीभागवतानंद गुरु

श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

जिनकी प्रेरणा से यह ग्रन्थ निर्मित हुआ, उनके श्रीचरणों में समर्पित



आचार्यश्री शङ्करदास गुरु

श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

प्राक्कथन

शास्त्र और शस्त्र दोनों का ही स्थान समाज में अपरिहार्य है। जिस प्रकार से एक शास्त्रज्ञ व्यक्ति समाज की रक्षा करता है, वैसे ही उचित हाथों में स्थित शस्त्र भी संसार का त्राण करता है। ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के मत में यह बात वर्णित है कि जिस क्षेत्र में एक भी धनुर्धर होता है, उसके आश्रय में शेष जन निर्भय होकर निवास करते हैं। धनुर्विद्या यजुर्वेदीय उप-वेदाधिकार के अन्तर्गत आती है। इसके प्राचीन आचार्यों में भगवान् शिव, वैशम्पायन, परशुराम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, द्रोण एवं शार्ंगधर आदि प्रसिद्ध हैं। अधुना धनुर्विद्या मात्र एक क्रीड़ागत विषय हो सिमट कर रह गयी है। कुछ वनवासी समुदाय इसके परंपरागत स्वरूप को आज भी जीवित रखे हुए हैं।

युद्ध में अनेकों वर्णों तथा जातियों का समावेश होता है। मुख्य योद्धा समूह क्षत्रियों का ही होता है। युद्धस्थल में मर्यादा तथा शैली का शिक्षण ब्राह्मण करते हैं - *धनुर्वेदे गुरुर्विप्रः*। युद्धस्थल में अश्व, हाथी, रथ आदि का संचालन कोचवान्, सारथी, सूत, महावत आदि करते हैं। युद्ध का उपस्कर कर्मकार, लौहकार, असिनिर्माता आदि तैयार करते हैं - यजुर्वेद भी कहते हैं - *नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च।* युद्ध में धर्मरक्षा के लिए चारों वर्णों के हितार्थ शस्त्राधिकार स्मृतियों से सिद्ध है।

आधुनिक युद्धशैली में भी संदिग्ध वस्तुओं को खोजने तथा अन्य संवेदनशील कार्यों के लिए कुत्तों का प्रयोग होता है - *नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च* । पूर्वकाल में भी सैकड़ों सहस्रों योजनों तक मारक क्षमता रखने वाले अस्त्रों का परिविनियोग मन्त्रवेत्ता ऋषिगण करते हैं - *तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि* । समयानुसार ज्ञान विज्ञान की परम्परा का लोप एवं प्राकट्य होता रहा है। पूर्वकाल में विमान तथा प्रक्षेपास्त्रों का वर्णन शास्त्रों तथा संहिताओं

में प्राप्त होता है जिससे उस समय के ज्ञान विज्ञान का बोध करना कठिन नहीं है। बीच में कालक्रम के प्रभाव से उनका लोप होना और आज पुनः आधुनिक विज्ञान के उत्कर्ष में उनका अंशतः प्रकटीकृत होना सिद्ध ही है। यजुर्वेद का अप्रतिरथ सूक्त तो पूर्णतया युद्ध को ही समर्पित है।

प्रस्तुत ग्रंथ दिव्यास्त्र विमर्शिनी अपने आप में आधुनिक समाज के लिये एक महत्वपूर्ण कृति है क्योंकि इसमें ज्ञानबीज के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण लुप्तप्राय दिव्यास्त्रों के मन्त्र, स्वरूप, मर्यादा एवं विधानों का एकत्रीकरण किया गया है जो कि एक प्रशंसनीय तथा श्रमसाध्य कल्प है। संसार को आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक पटलों पर अनेक दिव्य तत्व संचालित करते हैं जिनकी ऊर्जा तथा क्षमता समयानुसार दिव्यास्त्रों के रूप में परिलक्षित होती है। प्रस्तुत ग्रंथ में उनका यथासम्भव चित्रण भी सरलता से किया गया है।

अहिर्बुध्न्य, शरभेश्वर, दुर्वासा, भरद्वाज, नारद, शिव, वैशम्पायन तथा नाथपंथीय सिद्धों के मत से दिव्यास्त्रों का जो स्वरूप एवं विधान वर्णित है, उनका मानवीय दृष्टि से यथासम्भव अवलोकन करके ग्रन्थकार श्रीभागवतानंद गुरु ने एक ही स्थान पर संकलित किया है जो कि अभी तक उपलब्ध तथा प्रकाशित पूर्वग्रन्थों में द्रष्टव्य नहीं होता है। आचार्य अरुण पाण्डेय जी ने उनका शब्दानुशासन परिमार्जित करके श्लाघनीय कृत्य किया है अतः वे भी धन्यवाद के पात्र हैं। मैं आचार्यद्वय के मङ्गल तथा ज्ञानाभिवर्धन की कामना करता हूँ।

आचार्य शङ्करदास गुरु

--*

दिव्यास्त्रविमर्शिनी

निग्रह उवाच

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्तते |
शस्त्रभीत्या सदाधर्मस्तिष्ठन्नपि न बाधते ||०१||
विजये राज्यलक्ष्मीश्च मृते निर्जरसङ्कुलम् |
धरण्यां चाक्षया कीर्तिः सत्याजौ सक्रिये गते ||०२||
अधर्मः क्षत्रियस्यैष यद्व्याधिमरणं गृहे |
धर्मार्थे सन्त्यजेत् प्राणान् मोक्षभागी भवेत् पुमान् ||०३||
ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा स्त्रीषु बालवधेषु च |
साङ्कर्याद्रक्षणार्थं वा प्राणत्यागी तु मोक्षभाक् ||०४||

निग्रहाचार्य ने कहा - शस्त्र से रक्षित राष्ट्र में ही शास्त्रचर्चा का प्रसार होता है | शस्त्र के भय से अधर्म उपस्थित होता हुआ भी बाधा नहीं पहुँचाता है | जो व्यक्ति युद्ध में सम्मिलित होने जाता है, वह जीतने पर राज्यलक्ष्मी को प्राप्त करता है, मृत्यु पर देवताओं के समूह में स्थान पाता है तथा पृथ्वी पर उसकी कीर्ति अक्षय रहती है | क्षत्रिय के लिए घर में व्याधिग्रस्त होकर मरना अधर्म कहा गया है | धर्म की रक्षा के लिए जो अपने प्राणों का परित्याग करे, वह पुरुष मोक्ष का भागी होता है | ब्राह्मण, गौ, स्त्री तथा बालक आदि की हत्या होने पर उनकी रक्षा के लिए, अथवा समाज को वर्णसंकरता से बचाने के लिए प्राणों का त्याग करने वाला व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है |

श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमण्डलभेदिनौ |
परिव्राड्योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ||०५||
मूर्च्छितं विकलं भीतमकच्छं शस्त्रवर्जितम् |
स्त्रियं बालं तथा वृद्धमशस्त्रमन्ययोधिनम् ||०६||
विमुखं दीनवाक्यञ्च विनतं नैव हिंसयेत् |
सामान्ये कर्मणि प्राज्ञो दिव्यास्त्राणि न योजयेत् ||०७||
चापबाणगदाशक्तिशूलदण्डकृपाणकाः |
दिव्यास्त्रक्षेपणे प्रोक्ताः सर्वाभावे कुशास्स्मृताः ||०८||
जितेन्द्रियो जितश्वासो जितदौर्बल्यमत्सरः |
धनुर्वेदे सदा योज्यः सर्वनीतिसमन्वितः ||०९||

इस संसार में दो ही पुरुष सूर्यमण्डल का भेदन करके ऊर्ध्वगति को प्राप्त करते हैं - एक तो योगयुक्त संन्यासी और दूसरा युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त करने वाला मनुष्य | मूर्छित, विकल, भयभीत, वस्त्र खोल देने वाला, शस्त्रहीन, स्त्री, बालक, वृद्ध, दूसरे से युद्ध में व्यस्त, युद्ध से विमुख, दीनवाक्यों को बोलने वाला तथा शरण में आये हुए व्यक्ति की हत्या नहीं करनी चाहिए | सामान्य कर्म में बुद्धिमान् व्यक्ति दिव्यास्त्रों का प्रयोग न करे | दिव्यास्त्र को चलाने के लिए धनुष-बाण, गदा, शक्ति, शूल, दण्ड तथा कृपाण का प्रयोग कहा गया है | इन सबों के अभाव में कुश का प्रयोग बताया गया है | इन्द्रिय, श्वास, दुर्बलता एवं मत्सर को जीतने वाला, सभी नीतियों के ज्ञान से युक्त व्यक्ति को ही धनुर्वेद में लगाना चाहिए |

यो देवानां प्रियो भूत्वा न देवानां प्रियङ्करः |
स देवानांप्रियो भूत्वा न देवानां प्रियो भवेत् ||१०||
यो देवानांप्रियो भूत्वा नदेवानां प्रियङ्करः |
स देवानां प्रियो भूत्वा न देवानांप्रियो भवेत् ||११||

जो देवताओं का प्रिय होकर भी धर्माचार के द्वारा देवताओं का प्रिय नहीं करता है, वह मूर्ख बन जाता है और फिर देवताओं का प्रिय नहीं रह पाता है | जो मूर्ख होकर भी रत्न के समान प्रकाशित देवताओं का धर्माचार के द्वारा प्रिय करता है, वह देवताओं का प्रिय बन जाता है और फिर मूर्ख नहीं रहता है |

ज्ञानवृद्धो भवेद्विप्रश्चमूवृद्धश्च भूपतिः |
कोषवृद्धो भवेद्वैश्यो वत्सरेण चतुर्थकः ||१२||
जगन्ति देवा मन्त्राश्च सर्वे विप्रपदानुगाः |
तस्मात् मन्त्रप्रयोगाश्च प्रकर्तव्याः सुमेधसा ||१३||

ब्राह्मण ज्ञान से वृद्ध होता है, राजा अपनी सेना से वृद्ध होता है, वैश्य धन से तथा चतुर्थवर्ण (शूद्र) अपनी आयु के वर्षों से वृद्ध होता है | सम्पूर्ण संसार, देवता तथा मन्त्र, ये सभी ब्राह्मण के चरणों का अनुसरण करते हैं, अतएव अच्छी बुद्धि के द्वारा ही मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए |

वकाराद्वासुदेवश्च तथा वैशाखनन्दनः |
शकाराच्छंकरश्चैव श्वा शकाराच्च निर्मितः ||१४||
श्वा वा मा शङ्करो भूयाद्विष्णुर्वैशाखनन्दनः |
तस्मादुच्चारणे काले नानृतं परुषं वदेत् ||१५||
शब्दब्रह्मेति तं प्राहुर्व्यासब्राह्मशुकादयः |
तस्योपासनया सिद्धिस्तस्माच्छब्दो महेश्वरः ||१६||

वकार से ही वासुदेव शब्द बनता है और वकार से ही वैशाखनन्दन (गधा) भी बनता है | शकार से ही शंकर शब्द भी बनता है और श्वा (कुत्ता) भी | जिस प्रकार से शकार का प्रयोग शंकर के स्थान पर श्वा अथवा वकार का प्रयोग विष्णु के स्थान पर वैशाखनन्दन आदि के उच्चारण में न लगे, इस हेतु से शब्दों के उच्चारण के समय असत्य एवं गाली आदि कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए | उस शब्द को 'ब्रह्म', ऐसा व्यास वशिष्ठ, शुकदेव आदि ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा है | उस शब्दब्रह्म की उपासना से ही कल्याण की प्राप्ति होती है इसीलिए शब्द को महान् ईश्वर कहा गया है |

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ |
ततो युद्धाय युज्यस्व कृष्णाज्ञैषा गरीयसी ||१७||
अवलोकितं सृजनं मया परिवर्तनं त्वलोकितम् |
अवलोकिताः सकला जनाः सकलं जगत् परिवर्तितम् ||१८||

परिवर्तितं खलु पोषणञ्जगतो निपातनमद्भुतम् |
भाग्यञ्च मे परिवर्तितं परिवर्तितानि धिया क्रियाः ||१९||
मम सुहृदः परिवर्तिता मम शत्रवः परिवर्तिताः |
परिवर्तिता विबुधाधिपाः परिवर्तितञ्च कलेवरम् ||२०||
परिवर्तिता मम सत्यता पुनरेव गोषु च मेऽनृतम् |
परिवर्तितावरुणौ मम सकला ग्रहाः परिवर्तिताः ||२१||
सर्वञ्च मे परिवर्तितं भवतः कृपापरिवर्तिता |
तमसापि सा यदि निष्कृता कमलेश का मम सद्गतिः ? ||२२||

सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, जय-पराजय को एक समान मानते हुए युद्ध के कर्तव्यमात्र के लिये लडे, ऐसी भगवान् श्रीकृष्ण की महत्वपूर्ण आज्ञा है | "मैंने सृष्टि को बनते हुए देखा और इसके परिवर्तन को भी देखा | मैंने सभी लोगों को देखा और समस्त संसार को बदलते हुए देखा | मैंने संसार का पोषण होते हुए देखा है और उसके अद्भुत संहार को भी देखा | मेरा भाग्य भी बदल गया और बुद्धि से प्रेरित होकर मेरी क्रियाएं भी परिवर्तित होती रहीं | मेरे मित्रगण बदल गए, मेरे शत्रुओं का व्यवहार भी बदल गया, देवतागण भी मेरे प्रति बदल गए और यहां तक कि मेरा शरीर भी बदलता ही रहा | मेरा सत्य मेरे प्रति बदल गया तथा इंद्रियों में स्थित मेरा असत्य भी बदल गया | दोनों संध्याएं बदलती रहीं और ग्रहों की चाल भी बदल गयी | ये सब बदलते रहे, किन्तु मेरे प्रति आपकी कृपादृष्टि कभी नहीं बदली | हे नारायण ! यदि मेरे मोह के कारण कभी वह भी बदल जाये तो क्या कभी मेरी सद्गति हो पाएगी !!"

एवं विचिन्त्य कालस्य गतिरस्ति सुदुर्जया |
सम्यग्ज्ञात्वा नरः पक्षापक्षौ मत्वा रणं व्रजेत् ||२३||
न धनेन न रूपेण न पण्येनाभिवर्द्धनम् |
न वाजीविकया भूत्या न चास्ति ग्रन्थसङ्ग्रहैः ||२४||
यस्य गेहे हरेर्भक्तिः सर्वदातिथिपूजनम् |
दया भूतेषु सर्वेषु तत्र प्रोक्ता समुन्नतिः ||२५||

ऐसा विचार करके काल की गति को दुर्जया समझकर भली प्रकार से पक्ष एवं विपक्ष का ज्ञान रखते हुए व्यक्ति युद्धभूमि में जाए | धन, रूप, व्यापार की वृद्धि अथवा उत्तम आजीविका अथवा सिद्धि से, ग्रन्थों के संग्रह से उन्नति नहीं होती है | जिसके घर में भगवान् विष्णु के प्रति भक्ति है, सदैव अतिथियों का सत्कार होता है, सभी प्राणियों के प्रति दया का व्यवहार होता है, वहीं उन्नति कही गयी है |

नन्दीश्वरश्चोपमन्युर्लोमशश्च महामुनिः |
मार्कण्डेयो विजानाति सत्कृपाञ्चैव धूर्जटेः ||२६||
रुद्ध्यते दुर्जयः कालो यस्माद्वै शङ्कराज्ञया |
तस्मादज्ञानसम्मोहौ त्यक्त्वा शम्भुपदं स्मर ||२७||

नन्दीश्वर, उपमन्यु, महामुनि लोमश और मार्कंडेय ही भगवान् शिव की सुन्दर कृपा को जानते हैं | शिवजी की आज्ञा से दुर्जय काल भी स्तंभित हो जाता है, अतएव अज्ञान एवं मोह को छोडकर शिवजी के चरणों का स्मरण करो |

जन्मनैव कलौ घोरे क्वचिन्मित्रं क्वचिद्रिपुः |
हन्यते यवनैर्दुष्टैस्सर्वदायवनो नरः ||२८||
त्यागयुक्तः क्षमाशीलः सर्वभूतोपकारकः |
हन्यते केवलं विप्रः कुराज्ये म्लेच्छहेलया ||२९||
जनात्रक्षेत् स्थितान् पृष्ठे स्थितान् पार्श्वे तु पूजयेत् |
सम्मुखान् मर्मघातस्तु युद्धधर्मः सनातनः ||३०||
सर्वदा सैन्यशक्तिस्तु पुष्टा भवति भूभृता |
वाहिन्या पुष्यते दण्डः सर्वोपद्रवनाशकः ||३१||
मर्यादा चैव न्यायश्च पुष्येते दण्डनीतिना |
उभाभ्यां पुष्यते धर्मः समाजस्तेन पुष्यते ||३२||

इस घोर कलिकाल में जन्म से ही मित्र एवं जन्म से ही कोई शत्रु होता है क्योंकि जन्म से ही अयवन (हिन्दू) व्यक्ति दुष्ट म्लेच्छों के द्वारा सदा मारा जाता है | त्यागयुक्त, क्षमाशील, प्राणियों के प्रति उपकार करने वाला ब्राह्मण भी कुशासन में केवल म्लेच्छ समर्थन न करने के कारण मारा जाता है | धर्मयुद्ध में तत्पर योद्धा को चाहिए कि वह अपने पीछे खड़े (आश्रितों, प्रजा, शरणागत तथा कनीय योद्धाओं) की रक्षा करे, अपने पार्श्वभाग में खड़े (सहयोगियों तथा मार्गदर्शक योद्धाओं) का सम्मान करे तथा अपने सम्मुख खड़े (धर्मद्रोही विपक्षियों) का मर्मघातक प्रहारों से संहार कर डाले, यही युद्ध का सनातन धर्म है | कुशल राजा अपनी सेना को पुष्ट करता है | सेना ही दण्ड को पुष्ट करती है, दण्ड न्याय तथा मर्यादा को पुष्ट करता है | न्याय तथा मर्यादा धर्म को पुष्ट करते हैं और धर्म समाज को पुष्ट करता है |

यं दिव्यास्त्राणि लोके न च मुनिवचनाद्वाक्यदण्डा नुदन्ति
यं देवा नैव घ्नन्ति वनदनुदितिजा नैव नागा न यक्षाः |
वामाभ्रूज्याविलासैः प्रचलितरमणीनेत्रकाण्डप्रहारै -
र्जायामायाकुचाभ्यां निपतति मुहिरः को बली कामदेवात् ||३३||

जिसे संसार में दिव्यास्त्र, मुनियों के वचनों से प्रेरित श्राप भी नहीं मार पाते, जिसे देवता, वन्यजीव, दानव, दैत्य, नाग और यक्ष भी नहीं मार पाते हैं, वह मूर्ख भी स्त्री की भृकुटि से संचालित नयनरूपी बाण के प्रहार से तथा स्त्री के मायामय स्तनों से मारा जाता है, इस स्थिति में कामदेव के समान बली कौन होगा ?

न ब्रह्मा नैव रुद्रो न च भृगुतनयाकान्त इन्द्रो बलिष्ठ -
स्तायन्ते नैव लोकं न च सृजनकलां कल्पयन्तीति मन्ये |
वृन्दाहल्या च वाणी विजयति त्रिदशान्मोहिनीरूपकान्तिः
कं कैर्वा हन्ति कामो न जगति विदितस्सर्वदेवाधिदेवः ||३४||

ब्रह्मा, रुद्र, भृगुपुत्री लक्ष्मी के पति विष्णु अथवा बलवान् इन्द्र आदि इस संसार का निर्माण अथवा पालन नहीं करते हैं, ऐसा मैं समझता हूँ, क्योंकि विष्णु को वृन्दा, इन्द्र को अहल्या, ब्रह्मा को सरस्वती एवं रुद्र को मोहिनी के रूप की कान्ति जीत लेती है | सभी देवताओं का भी देवता कामदेव किसे, किन उपायों के द्वारा मार डाले, इसे संसार में कोई नहीं जानता है |

स देवो दुर्धरैश्वर्यो जीवानां संयमेन च |
यमेति त्रिषु लोकेषु ज्ञायते सकलैर्बुधैः ||३५||
यच्चकिञ्चित्क्वचित्तत्त्वं धार्यत आत्मभिर्भुवि |
यो जानाति स धर्मस्तं नानाविल्लक्षयोनिषु ||३६||
कालदण्डं करे धृत्वा दण्डपाणिर्महाबलः |
शास्तास्ति सर्वराजानां तस्माद्राजेति कथ्यते ||३७||

दुर्धर ऐश्वर्य को धारण करने वाला वह देव जीवों का संयमन करने से तीनों लोकों में बुद्धिमानों के द्वारा यम और लाखों योनियों में धारण करने योग्य नाना प्रकार के समस्त कर्तव्यों को जानने से धर्म कहलाता है | शासकों का भी शासक होने से उसे राज एवं हाथ में कालदण्ड लेकर (सदैव दुष्टों को दण्ड देने में तत्पर रहने से उसे) दंडपाणि भी कहा जाता है |

सज्जनेभ्यो धर्मराजः सौम्यरूपधरो वपुः |
दुष्टेभ्यो यमराजश्च करालोऽतीवदुःसहः ||३८||
कालयानं समारुह्य दण्डपाणिर्महाभुजः |
मृत्युं सारथिनं कृत्वा पार्श्वे चैव जरामयौ ||३९||
जगत्सर्वं सदाश्नाति तथायुर्नष्टचेतसाम् |
करोति प्रोट्टहासं स विहरन् धरणीतले ||४०||

सज्जनों के लिए वही देव सुंदर रूप वाला धर्मराज है, दुष्टों के लिए कराल एवं भयंकर रूप वाला यमराज है, काल रूपी रथ पर सवार

होकर मृत्युरूपी सारथी से द्वारा वेगवान् हुआ वह देव पार्श्वरक्षक के रूप में रोग तथा जरा को अपना सहायक बनाकर कालदण्ड से निरन्तर इस जगत् के नष्टबुद्धि वाले अनेक प्राणियों की आयु का भक्षण करता हुआ घोर अट्टहासपूर्वक विचरता है |

श्लोकार्धेनैव वक्ष्यामि कारणं जातिवर्णयोः |
कर्मणा पुष्टिमाप्नोति सिद्ध्यते चैव जन्मना ||४१||
जन्मना प्राप्य तद्वर्णं नैवाचरति कर्मणा |
वर्णबन्धुत्वदोषेण पुनर्जन्मनि भ्रष्टता ||४२||
वर्णयुक्तं यदा कर्म क्रियते नरपुङ्गवैः |
उन्नतिं लभते वर्णश्रेण्यां जन्मान्तरे पुमान् ||४३||
मोहाहङ्कारक्रोधैश्चाज्ञानेन वा कुमेधसा |
कर्मातिक्रमणं कृत्वा वर्णहीनस्ततो भवेत् ||४४||
पूर्वजन्मकृतं कर्म गुणञ्चाचरणं तु यत् |
तेन निर्धार्यते वर्णो जातिर्वा चास्य जन्मनः ||४५||
एवं तु वर्तमानानां कर्माणि त्रिगुणानि वै |
निर्धारयन्ति तद्वर्णञ्जातिं वा चाग्रजन्मनः ||४६||

आधे श्लोक में ही वर्ण एवं जाति का कारण बता रहा हूँ | जन्म से जातिवर्ण की सिद्धि होती है तथा कर्म से उसकी पुष्टि | जन्म से प्राप्त वर्ण के अनुसार यदि कर्म न किया जाय तो इससे व्यक्ति वर्णबन्धुत्व के दोष से युक्त होकर अगले जन्म में वर्णभ्रष्टता को प्राप्त होता है | हे विप्र ! अपने वर्ण के अनुसार जब श्रेष्ठ व्यक्तियों के द्वारा कर्म किया

जाता है तो अगले जन्म में उन्हें वर्ण में उन्नति प्राप्त होती है | मोह, अहंकार, क्रोध अथवा दुर्बुद्धि वाले अज्ञान के कारण जब व्यक्ति अपने वर्ण के कर्म का अतिक्रमण करके अन्य वर्णों के कर्म को धारण करता है तो वह वर्णहीनता को प्राप्त होता है | पूर्वजन्म के आचरण, गुण तथा कर्म इस जन्म की जाति तथा वर्ण का निर्धारण करते हैं | उसी प्रकार से वर्तमान के कर्म तथा तीनों गुणों का अनुपात सर्वदा अगले जन्म के वर्ण तथा जाति का निर्धारण करते हैं |

पुरुषार्थञ्च भाग्यञ्च द्वे चक्रे चैव निश्चिते |
वहतः साम्यभावेन रथं जीवनरूपिणम् ||४७||
भाग्यं तु सर्वदा लोके पुरुषार्थे समाश्रितम् |
बलाबलेन भाग्यस्य पुरुषार्थं प्रभावितम् ||४८||
यथैकेनैव चक्रेण नैवापसरते रथम् |
का वार्ता लोकयात्राया विना भाग्यं परेण वा ||४९||
उभयोश्चक्रयोर्मध्ये वामदक्षिणभेदतः |
जीवनेऽपि च तद्विद्धि यदस्ति सुमहत्तरम् ||५०||
कर्मणा सिद्ध्यते भाग्यं भाग्येनाङ्गानि एव च |
अङ्गैश्च क्रियते कर्म ह्येतत् सामुद्रिकं मतम् ||५१||
यथा नीचगया तुङ्गमालया ज्ञायते नरैः |
गुणं वा परिमाणन्तु तथाङ्गलक्षणादिभिः ||५२||

पुरुषार्थ तथा भाग्य जीवनरूपी रथ के दो पहिये निश्चित किये गए हैं जो एक दूसरे के पूरक बन कर इसका वहन करते हैं | इस संसार में

भाग्य सर्वदा पुरुषार्थ पर आश्रित रहता है तथा भाग्य के बलाबल से पुरुषार्थ भी प्रभावित होता है | जिस प्रकार एक चक्के से रथ नहीं चलता, उसी प्रकार से बिना भाग्य या पुरुषार्थ के जीवन यात्रा की क्या बात करनी ? वाम तथा दक्षिण भेद से दोनों चक्रों के मध्य जो भी अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हो, जीवन के परिप्रेक्ष्य में भाग्य तथा पुरुषार्थ के मध्य अधिक महत्वपूर्ण भी उसी के आधार पर समझना चाहिए | हे विप्र ! कर्म से भाग्य की सिद्धि होती है तथा भाग्य के अनुसार अंगों का निर्माण होता है | वही अंग पुनः अपने अपने संस्कारों के अनुसार कर्म में प्रवृत्त किये जाते हैं, ऐसा सामुद्रिक शास्त्रियों का मत है | जैसे नदी या पर्वत के आकार प्रकार से उसके परिमाण आदि का ज्ञान मनुष्य करता है वैसे ही अंगों के लक्षणों से व्यक्ति के स्वाभाविक गुणों का बोध होता है|

पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते |
दारिद्र्येणाङ्गहीनत्वेनापुत्रत्वेन वा पुनः ||५३||
यथा वारिप्रवाहेण नीचगा वहते तृणम् |
संस्कारं याति कालेनानन्तजन्मनि जन्मनि ||५४||
पूर्वपापं कुभावश्च चित्तमाश्रित्य सुव्रत |
आयातश्चाङ्गहीनत्वेन देहे दण्डभागिनम् ||५५||
न विश्वासो वर्तितव्यमङ्गहीनस्य वै भुवि |
यतस्तु पूर्वपापेन विकलाङ्गाः सदाप्लुताः ||५६||
इन्द्रियाणि वरेण्यानि देहेऽस्मिन् मांसकर्दमे |
ततः परं मनः प्रोक्तं बुद्धिश्चित्तं ततः परम् ||५७||

पूर्वजन्म में किया हुआ पाप रोग के रूप में बाधा देता है अथवा वह निर्धनता, विकलांगता या सन्तानहीनता के रूप में भी कष्ट देता है | जैसे जल के प्रवाह का आश्रय लेकर नदी तृण आदि को बहुत दूर तक बहा ले जाती है, वैसे ही काल का आश्रय लेकर अनन्त जन्मों तक संस्कार भी साथ साथ जाता है | पूर्वजन्म में कृत पाप या कुभाव चित्त में सुरक्षित होकर अगले जन्म में दंडभागी के शरीर में अंगहीनता के रूप में लक्षित होता है | अतः जो व्यक्ति विकलांग है, उसका कभी विश्वास न करे क्योंकि सभी विकलांग पूर्वकृत पापों तथा कुभावों से आविष्ट हैं | इस मांससमूह से युक्त देह में मांस से श्रेष्ठ इंद्रियां हैं | इंद्रियों से श्रेष्ठ मन, उससे श्रेष्ठ बुद्धि तथा उससे श्रेष्ठ चित्त है |

यद्बध्नाति सदा चित्तं सर्वसङ्ग्रहकारकम् |
आत्मानं तद्विजानीहि ब्रह्मांशञ्च सनातनम् ||५८||
जितेन्द्रियं मनो यस्य बुद्धिस्तु समदर्शिनी |
न प्रभावयति स्वाङ्गहीनत्वं तं महाव्रतम् ||५९||
यथा वै वातवेगेन चाल्यते नैव भास्करः |
तथा वै संयतात्मानं प्रारब्धं नैव बाधते ||६०||

जो सभी स्मृतियों तथा संस्कारों के आधार चित्त को भी बांध कर रख दे, उसे ही ब्रह्म का अंश सनातन आत्मा जानो | जिसका मन जितेन्द्रिय है, बुद्धि समदर्शिनी है, उस महाव्रत के चरित्र और व्यवहार को भला अंगहीनता क्या प्रभावित करेगी ? जैसे वायु का वेग सूर्य को प्रभावित नहीं कर सकता, वैसे ही संयतात्मा को प्रारब्ध भी बाधा नहीं देता |

काश्यपेनात्रिपुत्रेण वीर्यौजौ जातवेदसा |
प्राप्नुवन्ति महात्मानो निग्रहाः सर्वनिग्रहाः ||६१||
नमः परमपित्रे च ब्रूयाद्भास्करसन्निधौ |
राज्ञे नमोऽस्तु सोमायाग्नये वै ब्रह्मणे नमः ||६२||
ज्ञानविज्ञानसंयुक्ताः सर्वलोकहिते रताः |
शास्तारः छद्मवृत्तीनां निग्रहार्हा मनीषिणः ||६३||
अव्यक्ताद्वैतसंलिप्ता निर्भया धर्मपालकाः |
धर्मपुत्रा शुभा विप्राः निग्रहार्हा मनीषिणः ||६४||
लोभसंक्षोभनिर्मुक्ताः शमिताशिवकारकाः |
सर्वाचार्यमतं ज्ञात्वा निग्रहार्हा मनीषिणः ||६५||
देवताभेदद्रष्टारो वर्णाश्रमपरायणाः |
लोकमान्या महासत्वा निग्रहार्हा मनीषिणः ||६६||
धर्मसंरक्षणार्थायाधर्मसंहारहेतवे |
निग्रहाणाञ्च धर्माज्ञा लोके लोके प्रवर्धताम् ||६७||

सभी प्राणियों के ऊपर नियंत्रण करने वाले महात्मा निग्रहगण भगवान् सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि से बल और ओज प्राप्त करते हैं | (इसीलिए, निग्रहों को) भगवान् सूर्य का दर्शन होने पर, 'हे परमपिता ! आपको प्रणाम है', चन्द्रदेव के दर्शन होने पर, 'हे महाराज ! आपको प्रणाम है', तथा अग्निदेव के दर्शन होने पर, हे परब्रह्म ! आपको प्रणाम है', ऐसा कहना चाहिए | जो बुद्धिमान् जन ज्ञान और विज्ञान से युक्त है, सभी लोकों का हित करने में प्रवृत्त रहते हैं, पाखण्डियों का मर्दन करने

वाले हैं, वे ही निग्रहत्व के योग्य हैं | जो बुद्धिमान् जन अव्यक्तरूपी अद्वैत के मार्ग पर चलने वाले हैं, जिनके व्यक्तित्व में निर्भयता है, जो धर्म का पालन करने वाले हैं, ऐसे धर्माचारी शुभ ब्राह्मण ही निग्रहत्व को धारण करने के योग्य हैं | जो बुद्धिमान् जन लोभादि के विकारों से मुक्त हैं, अशुभों का शमन करने में दक्ष हैं, सभी आचार्यों के मत [श्री (शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, मध्वाचार्य, रामानंदाचार्य, कौलाचार्य, माहेश्वराचार्य, निग्रहाचार्य, पाशुपताचार्य, अघोराचार्य) आदि] के ज्ञान को प्राप्त करके ही निग्रहत्व को योग्य होते हैं | जो बुद्धिमान् जन पञ्चदेवों में अभेदबुद्धि रखने वाले हैं, वर्णाश्रम की मर्यादा के अनुरूप आचरण करने वाले हैं, अपने सदाचरण से समाज में सम्मान और तेजस्विता प्राप्त कर चुके हैं, वे ही निग्रहत्व के योग्य हैं | धर्म की रक्षा के लिए एवं अधर्म के संहार के लिए निग्रहों की यह धर्माज्ञा लोक लोकान्तर में वृद्धि को प्राप्त हो |

मुक्तममुक्तं शस्त्रञ्च मुक्तामुक्तं तथैव च |
यन्त्रमुक्तं चतुर्धा वै युद्धकाले भवन्ति हि ||६८||
धनुर्वेदे गुरुर्विप्रः क्षत्रियाय विशे तथा |
युद्धाधिकारः शूद्राणां स्वयं व्याधादिशिक्षया ||६९||
ब्राह्मणाय धनुर्देयं करवालञ्च वर्मणे |
वैश्याय दापयेत्कुन्तं गदां शूद्राय निर्दिशेत् ||७०||
अभ्यासे यौगिकं चापं युद्धे वा युद्धसंज्ञकम् |
लुब्धधूर्तकृतघ्नेभ्यो नैव मन्दाय दापयेत् ||७१||

मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त एवं यन्त्रमुक्त, ये चार प्रकार के शस्त्र युद्धकाल में प्रयुक्त होते हैं | धनुर्वेद में ब्राह्मण ही क्षत्रिय एवं वैश्य का गुरु होता है | व्याधवृत्ति आदि के लिए शूद्र को भी युद्धाधिकार सीखने और अभ्यास करने का विधान है | प्रारम्भकाल में ब्राह्मण को धनुष दे, क्षत्रिय को तलवार, वैश्य को कुन्त (भाला, शूल आदि) तथा शूद्र को गदा का निर्देश करे | अभ्यास में यौगिक नामक धनुष तथा युद्धकाल में युद्धनामक धनुष का प्रयोग करे | लोभी, धूर्त, कृतघ्न और मूर्ख को शस्त्र की शिक्षा नहीं देनी चाहिए |

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दिव्यास्त्राणां स्वरूपकम् |
अहिर्बुध्न्येन रुद्रेण नारदायोदितं पुरा ||७२||
शताधिकानि दिव्यान्यस्त्राणि दुर्वाससा पुरा |
भरद्वाजाय कथितान्यशेषाणि वदाम्यहम् ||७३||
कलौ सिद्धिस्तु दिव्यानामस्त्राणां भुवि दुर्लभा |
ज्ञानबीजस्य रक्षार्थं प्रकाशीक्रियतेऽधुना ||७४||

अब मैं दिव्यास्त्रों के स्वरूप का वर्णन करने जा रहा हूँ जो देवर्षि नारद के लिए भगवान् अहिर्बुध्न्य रुद्र ने पूर्वकाल में कहा था | दुर्वासा ऋषि के द्वारा भरद्वाज मुनि के लिए सौ से अधिक दिव्यास्त्र पूर्वकाल में बताये गए हैं, उन सबों को भी मैं कहता हूँ | कलियुग में इस संसार के भीतर दिव्यास्त्रों की सिद्धि दुर्लभ है किन्तु फिर भी ज्ञानबीज की रक्षा के लिए वे सब मेरे द्वारा अब प्रकाशित किये जा रहे हैं |

दिव्यास्त्रस्वरूपवर्णनम्

निग्रह उवाच
रूपं नारायणास्त्रस्य मोहिनीकुसुमोपमम् |
तैजसं विस्तृताग्रञ्च सहस्रार्कसमप्रभम् ||०१||
सहस्त्रधारमत्युग्रं दानवान्तकरं शुभम् |
शरणागतमायान्तं नैव हन्ति कदाचन ||०२||
प्रतिपच्चन्द्रसङ्काशमध्याष्टास्त्र विदीपितम् |
शतधारं तडिद्दीप्तमेतत्पाशुपतं मतम् ||०३||
सहस्रारेण संयुक्तं विद्युज्वालामितप्रभम् |
प्रस्तरप्रतिमं मुष्टिग्राह्याग्रं ब्राह्ममीरितम् ||०४||

नारायणास्त्र का स्वरूप मोहिनी के फूल के समान है, वह सहस्त्रधारों से युक्त, उग्र तथा सहस्त्रसूर्यों की कान्ति वाला है | तेजोमय है और सामने से फैला हुआ है, शुभ है, दानवों का नाश करने वाला है | यह अपने शरणागतों को कभी नहीं मारता है | जो प्रतिपदा के चन्द्रमा के समान अल्पदृश्य है, मध्यभाग में आठ अस्त्रों या कोणों से दीप्तिमान् है, जिसमें सौ तीक्ष्ण अरे लगे हुए हैं, जो बिजली के समान प्रकाशित है, उसे पाशुपतास्त्र कहते हैं | सहस्त्रधारों से युक्त, बिजली के समान आकृति वाला, पत्थर के समान कठोर और अग्रभाग में मुट्ठी से पकडे जाने योग्य अस्त्र को ब्रह्मास्त्र कहा जाता है |

दन्ष्ट्राकरालं दष्ट्रोष्ठं पिङ्गलाक्षं विभीषकम् |
गृहीतपिङ्गकेशाग्रमेतद्ब्रह्मशिरो मतम् ||०५||
विष्णुचक्रमिति ख्यातं सहस्रारं सुदर्शनम् |
भीमाकारं पाशमेव कालपाशमिति स्मृतम् ||०६||
जृम्भणं त्वष्टवक्राङ्गं दण्डमेवं विदुर्बुधाः |
षट्कोणाग्रं ज्वलज्ज्वालमस्त्रमाग्नेयमुत्तमम् ||०७||
ज्वालाविलं वाजिवक्रमस्त्रं हयशिरो मतम् |
प्रस्वापनं कुवलयस्तबकस्तम्बसन्निभम् ||०८||
सतोयतोयदप्रख्यं तामसास्त्रमुदीरितम् |
कालास्त्रं भीषणं दण्डं षष्टिघण्टासमाकुलम् ||०९||

जिसके दाढ कराल हों, जिसने अपने दांतों से ओठों को काट डाला हो, जिसकी आँखें पीली और भयानक हैं, जिसके केश पीले रंग के हों, वही ब्रह्मशिर नामक अस्त्र बताया गया है | सहस्र अरों से युक्त विष्णु सम्बन्धी चक्र को सुदर्शन कहा जाता है| पाश की आकृति वाला अत्यन्त भयानक अस्त्र को कालपाश कहते हैं | बुद्धिमान् जन आठ स्थानों से टेढ़े अंगों वाले दंडाकार अस्त्र को जृम्भणास्त्र कहते हैं | जो अग्रभाग में छः कोणों वाला हो तथा जिससे जलती हुई अग्निज्वाला निकल रही हो, वह उत्तम आग्नेयास्त्र है | घोड़े के समान मुख वाला ज्वाला उगलता हुआ अस्त्र हयशिरस् कहलाता है | नीले कलम के गुच्छे के समान द्रुमाकार अस्त्र प्रस्वापनास्त्र कहलाता है | तामसास्त्र जलयुक्त बादल के समान होता है | दण्ड के समान, साठ शब्दायमान घण्टियों से युक्त अस्त्र को कालास्त्र कहा जाता है |

आद्यन्तचक्रयुग्दण्डं दण्डचक्रमिति स्मृतम् |
कालचक्रं चतुष्कोणं चान्ते राशिसमन्वितम् ||१०||
धर्मचक्रं सुवृतं स्याद्दशयज्ञायुधाङ्कितम् |
शैवं शतमुखाग्निस्तु दण्डवत्परिकीर्तितम् ||११||
शूलं वेणुदलाकारं तीक्ष्णधारं सुदण्डकम् |
रौद्रमुक्तं परश्वस्त्रं तीक्ष्णधारं भयानकम् ||१२||
शूलत्रयाङ्कितमुखं त्रिशूलं दण्डवद्भवेत् |
घोरं नाराचरूपं स्यादस्त्रमाहुर्मनीषिणः ||१३||
कृष्णास्यं पिङ्गनयनं ज्वालाकेशोर्ध्वबन्धनम् |
अघोरास्त्रमिदं प्रोक्तं नाम्ना चैवासिधारकम् ||१४||

जिसके आदि एवं अन्त में दो चक्र लगे हों उसे दण्डचक्रास्त्र कहा जाता है | चार कोणों से युक्त, अन्त में बारह राशियों से आवृत्त अस्त्र को कालचक्रास्त्र कहते हैं | वृत्ताकार, यज्ञसदृश दशायुधों से युक्त अस्त्र की धर्मचक्र संज्ञा है | जिसके सौ मुखों से अग्नि निकल रही हो उस दण्डाकार अस्त्र को शैवास्त्र कहते हैं | तीक्ष्ण धार से युक्त, बांस के पत्ते के समान त्रिदलयुक्त दण्डाकार अस्त्र को शूलास्त्र कहा गया है | रुद्र का प्रधान अस्त्र रौद्रास्त्र परशु भी कहलाता है जो अत्यन्त तीक्ष्ण एवं भयानक है | जिसके अग्रभाग में तीन शूल लगे हों, उस दण्डाकार अस्त्र को त्रिशूलास्त्र कहते हैं | बाण के आकार वाले अस्त्र को मनीषियों ने घोरास्त्र कहा है | काले वर्ण के, पीले नेत्रों वाले, केश के ऊपर में ज्वालामण्डल को धारण करने वाले, तलवार के समान तीक्ष्ण अस्त्र को अघोरास्त्र के नाम से बताया जाता है |

अस्त्रं सम्मोहनं नाम कमलं नालसंयुतम् |
ऐषीकं शरनालाभमस्त्रमाहुर्विचक्षणाः ||१५||
वज्राङ्कितचतुष्कोणं नटाभममितद्युतिम् |
ऐन्द्रचक्राख्यमस्त्रं तत्परवैरिभयङ्करम् ||१६||
सदा ज्वलितसर्वाङ्गं महिषाकृतिभीषणम् |
शुष्काशनिरिदं प्रोक्तमस्त्रमङ्गारसन्निभम् ||१७||
तादृशं शुक्लवर्णं तदार्द्राशनिरिति स्मृतम् |
पैनाकमस्त्रं परमं धनुस्तक्षकसन्निभम् ||१८||
कङ्कालाख्यं भवेदस्त्रं पिशाचाकृतिभीषणम् |
कपालमालिकामाहुः कापालास्त्रमनुत्तमम् ||१९||

डण्डी से युक्त कमल के समान सम्मोहनास्त्र होता है | सरकंडे के नाल के समान ऐषीकास्त्र होता है, ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है | चार कोणों वाला, शत्रुओं के लिए भयानक, प्रकाशयुक्त, कोण पर वज्रों से युक्त एवं लघुकाय अस्त्र को ऐन्द्रचक्रास्त्र कहते हैं | अंगों से ज्वाला निकालने वाला, भैंसे के समान आकृति और अंगारे के समान प्रदीप्त शुष्काशनि नामक अस्त्र होता है, यदि इसका वर्ण शुक्ल हो तो इसे आर्द्राशनि कहते हैं | तक्षकनाग के समान आकृति वाले धनुष को पैनाकास्त्र कहा जाता है | पिशाच की आकृति वाला महाभयानक कंकाल नामक अस्त्र होता है | कपाल की माला के समान उत्तम अस्त्र को कापालास्त्र के नाम से जाना जाता है |

सौरमस्त्रं समाख्यातं सूर्यबिम्बपरम्परा ।
अस्त्रं वरुणपाशाख्यं शीतवृत्तिसुदारुणम् ॥२०॥
सर्वतत्त्वमयं दाम धर्मपाशमिति स्मृतम् ।
वारुणं जालकाकारं द्वात्रिंशच्छिद्रसंयुतम् ॥२१॥
लगुडं शङ्कुजालाढ्यं सन्तापनमिदं विदुः ।
वायव्यमस्त्रं सारङ्गः सश्रृङ्ग इव कथ्यते ॥२२॥
शक्तिरेका प्रसिद्धैव शक्त्यन्तरमथोच्यते ।
द्विशिरस्कैकनाला च दशघण्टाविभूषिता ॥२३॥
मौसलं मुसलं प्रोक्तं विद्युद्दण्डमिवोज्ज्वलम् ।
गान्धर्वमस्त्रमादिष्टं वीणादण्डोपमाकृतिम् ॥२४॥

सूर्यबिम्ब के समान परम्परा वाले अस्त्र को सौरास्त्र कहा जाता है। जिसका स्वभाव शीतल हो तथा जो महाभयानक हो, उसे वरुणपाश कहते हैं। सभी तत्त्वों के तेज से युक्त रस्सी के समान दिखने वाले अस्त्र को धर्मपाश कहते हैं। बत्तीस छिद्रों से युक्त जाल के आकार का वारुणास्त्र होता है। लोहे की कीलों से व्याप्त डंडे के समान आकृति वाला सन्तापनास्त्र कहा गया है। संसार में प्रसिद्ध शक्ति के अतिरिक्त दूसरी शक्ति भी होती है। एक नाल, दो शिर तथा दश घंटियों वाले अस्त्र को शक्तिद्वयास्त्र कहते हैं। सींग के युक्त हिरण के समान आकृति वाले अस्त्र को वायव्यास्त्र कहते हैं। मुसल को ही मौसल कहते हैं जो बिजली के दण्ड के समान उज्ज्वल होता है। वीणा के दण्ड के समान आकृति वाले अस्त्र को गान्धर्वास्त्र कहते हैं।

दर्पणं दर्पणं प्रोक्तमस्त्रं पूर्णेन्दुसन्निभम् |
शोषणं विकटं शृङ्गमस्त्रं परविशोषणम् ||२५||
पैशाचमस्त्रं परममुल्कामुखमुदाहृतम् |
तेजःप्रभं स्मृतं प्रासप्रतिमं परदारणम् ||२६||
ऐन्द्रमस्त्रं वज्ररूपं तेजसां निलयं स्मृतम् |
अस्त्रं विलापनं नाम धाराधरमुदाहृतम् ||२७||
वैद्याधरास्त्रमाहुस्तत्पुष्पमालां तु मोहिनीम् |
मोदकी नाम परमा वल्लरी पुष्पशालिनी ||२८||
शिखरं नाम खट्वाङ्गमायुधं परिचक्षते |
अस्त्रं कङ्कालमपरं महाघण्टानिनादितम् ||२९||

दर्पण की आकृति वाला, पूर्णचन्द्र की प्रभा से युक्त दर्पणास्त्र है | महाविकट सींग के समान, शत्रुओं का शोषण करने वाला शोषणास्त्र होता है | सर्वदा उल्का उगलने वाला तथा अत्यन्त विस्तृत पैशाचास्त्र कहा गया है | शत्रुओं को विदीर्ण करने वाला भाले के आकार का तेजःप्रभास्त्र होता है | तेजस्विता की खान, वज्र की आकृति वाले को ऐन्द्रास्त्र कहते हैं | बादल की शक्ति से संचालित अस्त्र को विलापनास्त्र कहा जाता है | सबको मोहित करने वाली पुष्पमाला के समान अस्त्र को वैद्याधरास्त्र कहा जाता है | पुष्पों से युक्त लता के समान आकृति वाले श्रेष्ठ अस्त्र को मोदकी कहा जाता है | खट्वांग की आकृति वाले आयुध को ही शिखरास्त्र भी कहते हैं | बड़ी बड़ी घंटासमूहों से युक्त शब्दायमान अस्त्र को दूसरे प्रकार का कंकालास्त्र कहते हैं |

क्रौञ्चमस्त्रं महत्पक्षी क्रौञ्चाकृतिरिहोच्यते |
असिरत्नाह्वयं दिव्यमस्त्रं खड्गो महाद्युतिः ||३०||
अस्त्रं प्रशमनं नाम प्रोच्यते ध्वजसन्निभम् |
कन्दर्पदयितं चास्त्रमिक्षुः परमशोभनम् ||३१||
मदनं चामरप्रख्यमस्त्रं परभयावहम् |
सौमनं शिबिकाभं तदस्त्रमस्त्रविदो विदुः ||३२||
स्थूलमुक्ताक्षमालैव सत्यास्त्रं सर्वसाधकम् |
अस्त्रं संवर्तकं नाम महाशङ्खः प्रकीर्त्यते ||३३||
मायाधराह्वयं प्राहुरस्त्रं शाखिनमेव च |
सोमास्त्रमर्धचन्द्राभं सायकं सम्प्रचक्षते ||३४||

क्रौञ्च पक्षी के समान आकृति वाला क्रौञ्चास्त्र के नाम से बताया जाता है | दिव्य तेज से सम्पन्न अत्यन्त प्रकाशित खड्ग की आकृति वाला अस्त्र असिरत्नास्त्र कहलाता है | ध्वज के समान आकृति वाला प्रशमनास्त्र होता है | अत्यन्त सुन्दर ईख के दण्ड के समान कन्दर्पदयितास्त्र है | चामर की आकृति वाला, शत्रुओं के लिए महाभयानक मदनास्त्र है | अस्त्रविद्या के विशेषज्ञों ने पालकी की आकृति वाले अस्त्र को सौमनास्त्र कहा है | मोटी मोटी मुक्ताओं से गूंथी हुई सर्वार्थसाधक माला के समान सत्यास्त्र कहा गया है | महाशंख की आकृति वाले अस्त्र को संवर्तकास्त्र कहते हैं | अनेक शाखाओं वाले वृक्ष के समान आकृति वाले अस्त्र को मायाधरास्त्र कहा जाता है | अर्धचन्द्राकार बाण के समान सोमास्त्र की आकृति बताई गयी है |

त्वाष्ट्रमस्त्रं चैत्यसमं सदण्डमभिधीयते |
शीतेषुर्नाम कुम्भास्या स्रवन्ती सरिदुत्तमा ||३५||
त्रिकोणं दण्डवद्विद्याद्भगास्त्रममितद्युतिः |
सदामनं समाख्यातञ्चक्रं निरयमुच्यते ||३६||
सत्यवत्तन्महाभूतं व्यात्ताननमिदं विदुः |
वारणं नाम सर्पास्यं वारणं परमाङ्कुशम् ||३७||
धृष्टं कबन्धमुदरं विस्तृताननमुच्यते |
भृशाश्वतनयं नाम द्विधारं क्रकचं स्मृतम् ||३८||
सत्यकीर्तिस्तु मकरो व्यात्तवक्त्रोऽभिधीयते |
मोहः सर्पशिरो व्यात्तवक्त्रमस्त्रं विदुर्बुधाः ||३९||

दण्ड से युक्त चैत्यवृक्ष के समान त्वाष्ट्र नामक दिव्यास्त्र कहा गया है | कुम्भ के समान मुख वाली बहती हुई नदी को शीतेषु कहते हैं | अत्यन्त प्रकाशमान त्रिकोणयुक्त दण्ड के समान भगास्त्र की आकृति कही गयी है | बिना अरे वाले चक्र को सदामनास्त्र कहते हैं | मुख - मंडल को फैलाए हुए महाभूत के समान सत्यवदस्त्र होता है | सांप के मुख अथवा अंकुश की आकृति के समान वारणास्त्र का स्वरूप है | कबन्धयुक्त उदर एवं विस्तृत मुख वाले अस्त्र को धृष्टास्त्र कहते हैं | दोनों ओर की धार वाली आरी के समान भृशाश्वतनयास्त्र बताया गया है | मुख फैलाए हुए मगरमच्छ के समान सत्यकीर्त्यस्त्र की आकृति होती है | मुख फैलाये हुए सर्प के शिर के समान मोहास्त्र होता है, ऐसा बुद्धिमान् जन जानते हैं |

अतः परं प्रवक्ष्यामि शेषानस्त्रान् क्षयङ्करान् |
रभसं तारसङ्काशमस्त्रं सर्वास्त्रसादनम् ||४०||
सर्वनाभाह्वयं चास्त्रं कमण्डलुरिहोच्यते |
जृम्भकं नाम रक्ताक्षं त्रिपञ्जरमुदीर्यते ||४१||
प्रतिहाराख्यमस्त्रं तु कुन्तः परमभास्वरः |
ऋक्षास्यं भूतमुद्दिष्टमवाङ्मुखसमाह्वयम् ||४२||
पराङ्मुखाह्वयं चास्त्रं पञ्चाननशिरो विदुः |
धान्यास्त्रमेतत् परमं शालिस्तबकबन्धनम् ||४३||
वृषाक्षं वृषवक्त्राङ्कं महाभूतं प्रचक्षते |
कामरूपं महास्त्रं तु प्रतिभास्करसन्निभम् ||४४||

इसके बाद विनाश करने वाले शेष अस्त्रों को कहता हूँ | सभी अस्त्रों को काटने में समर्थ तारे की आकृति वाला रसभास्त्र होता है | कमण्डलु की आकृति वाला सुन्दर सर्वनाभास्त्र बताया गया है | जिसके नेत्र रक्तवर्ण के हों, और जो तीन पंजरों से जकड़ा गया हो, वह जृम्भकास्त्र कहा गया है | अत्यंत चमकीले भाले के समान आकृति वाला प्रतिहारास्त्र होता है | भालू के समान मुख वाले भूत को अवाङ्मुखास्त्र कहते हैं | पांच मुख तथा शिरों वाले अस्त्र को पराङ्मुखास्त्र कहते हैं | धान के गुच्छे के समान ग्रन्थित आकृति वाला धान्यास्त्र कहलाता है | बैल के समान नेत्र एवं मुख वाला महाभूतास्त्र होता है | सूर्य के समान प्रभा वाला महान् कामरूपास्त्र बताया गया है |

धनाख्यमस्त्रं मुकुटसमानममितद्युतिः |
दृढनाभाख्यमस्त्रं स्यान्नागो बहुफणान्वितः ||४५||
अस्त्रं कामरुचिर्नाम स्वस्तिकं परिचक्षते |
सुनाभं क्षुरिका तीक्ष्णा प्रोच्यतेऽस्त्रमनुत्तमम् ||४६||
मकरो नाम दिव्यास्त्रं दीपिकादण्डसन्निभम् |
दशाक्षमेतज्जानीयात् कौक्षेयकमवारितम् ||४७||
वृत्तिमन्तं चोष्ट्रमुखं वेतालमभिधीयते |
एकस्थं दशवक्त्रं तु दशवक्त्रमुदाहृतम् ||४८||
रुचिराख्यं भवेदस्त्रं हलं परमदारुणम् |
दशवर्षा काकमुखी दशकर्णमुदीर्यते ||४९||

मुकुट के समान चमकीले आकार वाला धनास्त्र कहा गया है जिसमें अपार प्रकाश होता है | अनेक फनों वाले नाग के समान दृढनाभास्त्र की आकृति होती है | कामरुचि नामक अस्त्र की आकृति स्वस्तिक के समान होती है | अस्त्रों में श्रेष्ठ, तीक्ष्ण छुरी के समान सुनाभास्त्र की आकृति होती है | जिस पर दीपक रखा जाता है, ऐसे दण्ड के समान आकृति वाले अस्त्र को मकरास्त्र कहते हैं | कभी मन्द न होने वाली तलवार के समान दशाक्षास्त्र की आकृति होती है | ऊँट के समान मुख वाले, विस्तृत अस्त्र को वेतालास्त्र कहते हैं | एक ही स्थान पर दशमुखों वाले की दशवक्त्रास्त्र संज्ञा है | सबों को चीरने वाले परम दारुण हल को रुचिरास्त्र कहते हैं | काक के समान मुख वाली दशवर्ष की आयु के समान दिखने वाली शक्ति दशकर्णास्त्र कहलाती है |

योगन्धरं दिवाभीतव्यात्तवक्रमिति स्मृतम् |
स्याद्वारुणममित्रघ्नं परास्त्रविनिवारणम् ||५०||
अनिद्रमस्त्रमुन्निद्रमिति प्राज्ञा विदुर्बुधाः |
भेत्तारमस्त्रमाख्यातं कुठारं परभेदनम् ||५१||
शतोदरास्त्रं भूतं स्याच्छतोदरसमन्वितम् |
अस्त्रं सौमनसं नाम जपाकुसुममञ्जरी ||५२||
पद्मनाभं महाभूतं पद्मालङ्कृतनाभिमत् |
महानाभाख्यमस्त्रं तु बको विकटकन्धरः ||५३||
ज्यौतिषं नाम परमं विमानमभिधीयते |
क्रमणं क्षेपणं प्रोक्तं परास्त्रक्रमणं महत् ||५४||

दिन में भय हेतु मुख फैलाने वाले को योगन्धरास्त्र कहते हैं | शत्रुओं के अस्त्रों को रोकने वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला वारुणास्त्र होता है | निद्रा का अभाव उत्पन्न करने वाले अस्त्र को अनिद्रास्त्र कहा जाता है | कुठार के समान आकृति वाले, शत्रुओं का भेदन करने वाले अस्त्र को कुठारास्त्र के नाम से कहा गया है | जिस भूत के सौ पेट हों, वह शतोदरास्त्र है | जपा के पुष्प की मंजरी के समान सौमनसास्त्र होता है | कमल से सुशोभित नाभि वाला महाभूत पद्मनाभास्त्र कहाता है | बगुले के समान आकृति वाला, विकट कन्धे वाला महानाभास्त्र होता है | उत्कृष्ट विमान के समान दिखाई देने वाला अस्त्र ज्यौतिषास्त्र कहलाता है | अतिक्रमण की क्रिया को क्षेपण कहते हैं | जो शत्रु के अस्त्र का अतिक्रमण करने में समर्थ हो, उसे क्षेपणास्त्र कहा गया है |

त्रैराशिर्वानरमुखं सपक्षं नरपादवत् |
सार्चिमालिमहाभूतमेकपाद्बहुहस्तकम् ||५५||
विमलास्त्रमिदं विद्यात्स्फाटिकाकारदोलिकाम् |
वराहसिंहमनुजकुकुराश्च गजाननाः ||५६||
यस्मिन्स्थितानि तं भूतं धृतिकास्त्रं विदुर्बुधाः |
एवं दिव्यास्त्ररूपाणि कथितानि मयानघ ||५७||
ध्यातं सकृद्भवानेककोट्यघौघं हरत्यरम् |
सुदर्शनस्य तद्दिव्यं भर्गो देवस्य धीमहि ||५८||
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि धनुर्वेदस्य साधनम् |
अस्त्राणां विनियोगञ्च वैशम्पायनकीर्तितम् ||५९||

वानर के समान मुख, पक्षियों के समान पंख एवं मनुष्य के समान पैरों वाले अस्त्र को त्रैराशिकास्त्र कहा जाता है | एक पैर एवं बहुत से हाथों वाला भूतविशेष सार्चिमाल्यस्त्र के नाम से जाना जाता है | स्फटिक से बनी पालकी के समान विमलास्त्र का आकार बताया गया है | जिस भूत में वराह, सिंह, मनुष्य, कुत्ता एवं हाथी के समान मुख हो, उसे धृतिकास्त्र के नाम से विद्वानों ने जाना है | हे निष्पाप ! इस प्रकार से मेरे द्वारा दिव्यास्त्रों के स्वरूप बताये गए हैं | जिनके अरे का एक बार ध्यान करने से करोड़ों जन्मों के पापसमूह नष्ट हो जाते हैं, हम उन सुदर्शन भगवान् के दिव्य तेजोमय स्वरूप का ध्यान करते हैं | अब मैं वैशम्पायन मुनि के द्वारा कहे गये धनुर्वेदसाधन एवं अस्त्रों के विनियोग को कहता हूँ |

चतुष्पाच्च धनुर्वेदो रक्तवर्णश्चतुर्मुखः ।
अष्टबाहुस्त्रिनेत्रश्च वृषारूढस्स उच्यते ॥६०॥
अनेकवल्गिताकारभूषणः पिङ्गलेक्षणः ।
जयमालापरिवृतः साङ्ख्यायनसगोत्रवान् ॥६१॥
सङ्ख्या परार्धपर्यन्ता तदयं साङ्ख्यमुच्यते ।
अयनं तस्य यस्मात्तद्ब्रह्मा साङ्ख्यायनस्स्मृतः ॥६२॥
दिव्यास्त्राणां ऋषिर्ब्रह्मा गायत्रीच्छन्द उच्यते ।
महेश्वरो देवतात्र विनियोगोऽरिनिग्रहे ॥६३॥
द्वात्रिंशद्वर्णकमनुं वर्णसङ्ख्यासहस्रकैः ।
जपित्वा सिद्धिमाप्नोति रिपूंश्चाप्यधितिष्ठति ॥६४॥

धनुर्वेद के चार पैर, लाल रंग, चार मुख, आठ हाथ, पीले रंग के तीन नेत्र होते हैं, यह वृषभ पर आरूढ़ होता है। अनेकों श्रेष्ठ, उज्ज्वल एवं विजयसूचक आभूषण तथा मालाओं से सज्जित होता है और इसका सांख्यायन गोत्र होता है। परार्ध की संख्या को सांख्य कहते हैं। वह सांख्य जिसका आधार है, उस ब्रह्मा को सांख्यायन कहा जाता है। दिव्यास्त्रों के ऋषि ब्रह्मा, गायत्री छन्द, महेश्वर देवता होते हैं। शत्रुओं के निग्रह हेतु इनका विनियोग होता है। धनुर्वेद के बत्तीस अक्षरों वाले मन्त्र को बतीस हजार बार जपने से योद्धा मन्त्र सिद्धि को प्राप्त करता है एवं शत्रुओं के ऊपर हावी होता है।

अत्र धनुर्धारणविधिः

त्रिराचम्य

ॐ ह्रीं शङ्कराय नमः | शिखास्थाने

ॐ ह्रीं केशवाय नमः | बाह्वोः

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः | नाभिमध्ये

ॐ ह्रीं गणपतये नमः | जङ्घयोः

एवं न्यासविधानं कृत्वा

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि |
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ||

इति यजुषा चापं धारयेत् |

{ तीन बार आचमन करके उपर्युक्त मन्त्र से न्यास करने के बाद यजुर्वेदोक्त मन्त्र से धनुष को धारण करे }

|| **ॐ नमो भगवते धनुर्वेदाय मां रक्ष रक्ष मम शत्रुं बन्धय भक्षय हुं फट् स्वाहेति** द्वात्रिंशद्वर्णको मनुः ||

ॐ नमो भगवते धनुर्वेदाय मां रक्ष रक्ष मम शत्रुं बन्धय भक्षय हुं फट् स्वाहा, ये धनुर्वेद का ३२ वर्णों का मन्त्र बताया गया है |

युद्धारम्भमन्त्रवर्णनम्

ॐ नमः परमात्मने शक्तिमते विरूपाक्षाय भालनेत्राय रं हुं फट् स्वाहा |

एवं सहस्रधा जप्त्वा रुद्रं ध्यात्वा ततो दुर्गां ध्यात्वा
जयं देहीति कामनया प्रणम्य
ॐ ह्रीं श्रीं हैमवतीश्वरीं ह्रीं स्वाहा
मन्त्रमुच्चरेत् |

ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा |
इति मन्त्रेण रुद्राणीं ध्यात्वा ततो युद्धमारभेत |

युद्ध आरम्भ करते समय *ॐ नमः परमात्मने शक्तिमते विरूपाक्षाय भालनेत्राय रं हुं फट् स्वाहा* इस मन्त्र को एक हजार बार जप कर रुद्र का ध्यान करे | इसके बाद दुर्गा का ध्यान करके 'हमें विजय दो' ऐसी कामना से प्रणाम करके *ॐ ह्रीं श्रीं हैमवतीश्वरीं ह्रीं स्वाहा* मन्त्र का उच्चारण करे | *ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा* मन्त्र से रुद्राणी का ध्यान करके फिर युद्ध प्रारम्भ करे |

ब्रह्मास्त्रवर्णनम्

ॐ देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदे

मन्त्रस्यास्य मन्त्री निखर्वसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् |
विपरीतेन रोधः|
बगलापि ब्रह्मास्त्रमिति कथ्यते | षड्त्रिंशल्लक्षजपात् सिद्धिः |

इस मन्त्र को जानने वाला एक खरब (मतान्तर से दस खरब) संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |
बगलामुखी को भी ब्रह्मास्त्र कहा जाता है |
उसकी सिद्धि छत्तीस लाख जप से होती है |

ब्रह्मदण्डवर्णनम्

ॐ प्रचोदयात् नो यो धियः धीमहि देवस्य भर्गो वरेण्यं सवितुस्तत् अमुकशत्रुं हन हन हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वशत्रूनथवा साध्यनाम |
लक्षद्वयजपात् सिद्धिः | विपरीतेन रोधः |

अमुक के स्थान पर *सर्वशत्रून्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे |
दो लाख जपने से सिद्धि होती है, विपरीत जपने से निरोध होता है |

ब्रह्मशिरवर्णनम्

ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् भर्गो देवस्य धीमहि
तत्सवितुर्वरेण्यं शत्रून्मे हन हन हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री त्रिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला तीन लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

पाशुपतवर्णनम्

ॐ देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदे ॐ श्लीं पशुं हुं फट् अमुकशत्रुं हन हन हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वशत्रूनथवा साध्यनाम |
लक्षद्वयजपात् सिद्धिः | विपरीतेन रोधः |

अमुक के स्थान पर *सर्वशत्रून्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे |
दो लाख जपने से सिद्धि होती है, विपरीत जपने से निरोध होता है |

वायव्यास्त्रवर्णनम्

ॐ वायव्यया या वायव्ययान्योर्वाययिया वा अमुकं मे शत्रुं हन हन हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वमथवा साध्यनाम |
नियुतद्वयजपात् सिद्धिः | विपरीतेन रोधः |

अमुक के स्थान पर *सर्वम्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे |
बीस लाख जपने से सिद्धि होती है, विपरीत जपने से निरोध होता है |

आग्नेयास्त्रवर्णनम्

ॐ अग्निस्त्यता हृदुभूं शिवं वनाश्विविणि हगादशंरूपनः सदवा हादिति तोयति राममसो हित्वा वा न सुसेद वेदया अमुकं शत्रुं मे हन हन हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वमथवा साध्यनाम ।
नियुतद्वयजपात् सिद्धिः । विपरीतेन रोधः ।

अमुक के स्थान पर *सर्वम्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे ।
बीस लाख जपने से सिद्धि होती है, विपरीत जपने से निरोध होता है ।

नारसिंहास्त्रवर्णनम्

ॐ वज्रनखवज्रदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् |
विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला एक लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

वैकुण्ठास्त्रवर्णनम्

ॐ नमाम्यहं मृत्युमृत्युं भद्रं भीषणं नृसिंहं सर्वतोमुखं ज्वलन्तं महाविष्णुं वीरमुग्रम्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वात्रिंशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बत्तीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कालपावकास्त्रवर्णनम्

ॐ नमाम्यहं मृत्युमृत्युं भद्रं भीषणं नृसिंहमुग्रम्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

नारायणास्त्रवर्णनम्

ॐ म्हम्यमानत्युंमृत्युमृद्रंभणंषभीहंसिंनृ
खंमुतोर्वसन्तंलज्वष्णुंविहामरंवीग्रंउ

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वात्रिंशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः | विपरीतं नृसिंहानुष्टुभमन्त्रमुग्रमिति |

इस मन्त्र को जानने वाला बत्तीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |
मन्त्र का विपरीत नृसिंह का 'उग्रं वीरं' संज्ञक अनुष्टुप् मन्त्र है |

अपरनारायणास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः
श्रीपुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टिं प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णं
पञ्चविषूचिकां हन हन एकाहिकं द्व्याहिकं
त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय
चतुरशीतिवातानष्टादशकुष्ठानष्टादशक्षयरोगान् हन हन सर्वदोषान्
भञ्जय भञ्जय तत्सर्वं नाशय नाशय शोषय शोषय आकर्षयाकर्षय
शत्रून् मारय मारय उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय
स्तम्भय निवारय निवारय विघ्नैर्हन विघ्नैर्हन दह दह मथ मथ
विध्वंसय विध्वंसय चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा
परविद्यां छेदय छेदय भेदय भेदय चतुःशीतानि विस्फोटय
विस्फोटय अर्शवातशूलदृष्टिसर्पसिंहव्याघ्रद्विपदचतुष्पदबाह्यान्दिवि
भुव्यन्तरिक्षे अन्येऽपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन हन
विद्युन्मेघनदीपर्वताटवीसर्वस्थानरात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरु कुरु
हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः

लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

एक लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सुदर्शनास्त्रवर्णनम्

(नाथपन्थीय शाबर)

ॐ नमो सुदर्शनचक्राय महाचक्राय शीघ्र आगच्छ आगच्छ प्रगटय प्रगटय मम अमुकं शत्रुं काटय काटय मारय मारय ज्वालय ज्वालय विध्वंसय विध्वंसय छेदय छेदय मम सर्वत्र रक्षय रक्षय हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वमथवा साध्यनाम |
ग्रहणेऽष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः |

अमुक के स्थान पर *सर्वम्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे |
ग्रहण के समय एक सौ आठ बार जपने से सिद्धि होती है |

महापाशुपतास्त्रवर्णनम्

(नाथपन्थीय शाबर)

ॐ नमो पाशुपतास्त्र स्मरणमात्रेण प्रकटय प्रकटय शीघ्र आगच्छ आगच्छ मम सर्वशत्रुसैन्यं विध्वंसय विध्वंसय मारय मारय हुं फट्

ग्रहणेऽष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः।

ग्रहण के समय एक सौ आठ बार जपने से सिद्धि होती है।

ब्रह्मास्त्रवर्णनम्

(नाथपन्थीय शाबर)

ॐ नमो ब्रह्माय नमः स्मरणमात्रेण शीघ्र आगच्छ आगच्छ प्रकटय प्रकटय मम सर्वशत्रुं नाशय नाशय शत्रुसैन्यं नाशय नाशय घातय घातय मारय मारय हुं फट्

ग्रहणेऽष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः ।

ग्रहण के समय एक सौ आठ बार जपने से सिद्धि होती है ।

यमास्त्रवर्णनम्

(नाथपन्थीय शाबर)

ॐ नमो यमदेवताय नमः स्मरणमात्रेण प्रकटय प्रकटय अमुकं शीघ्र मृत्युं हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वमथवा साध्यनाम। ग्रहणेऽष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। प्रयोगे नवोत्तरशतं जप्त्वा शत्रुनाम्ना योजयित्वा भस्ममभिमन्त्र्य चालयेत्।

अमुक के स्थान पर *सर्वम्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे। ग्रहण के समय एक सौ आठ बार जपने से सिद्धि होती है। प्रयोग के समय एक सौ नौ बार शत्रु के नाम के साथ जोडकर जपे एवं भस्म को अभिमन्त्रित करके सञ्चालित करे।

आग्नेयास्त्रवर्णनम्

(नाथपन्थीय शाबर)

ॐ नमो अग्निदेवाय नमः शीघ्रं आगच्छ आगच्छ मम अमुकं शत्रुं ज्वालय ज्वालय नाशय नाशय हुं फट्

अमुकस्थाने सर्वमथवा साध्यनाम | ग्रहणेऽष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः | प्रयोगे नवोत्तरशतं जप्त्वा शत्रुनाम्ना योजयित्वा भस्ममभिमन्त्र्य चालयेत् |

अमुक के स्थान पर *सर्वम्* अथवा साध्य शत्रु का नाम पढे | ग्रहण के समय एक सौ आठ बार जपने से सिद्धि होती है | प्रयोग के समय एक सौ नौ बार शत्रु के नाम के साथ जोडकर जपे एवं भस्म को अभिमन्त्रित करके सञ्चालित करे |

दण्डचक्रास्त्रवर्णनम्

ॐ आत्मने चक्राय कवचाय हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कालचक्रास्त्रवर्णनम्

विल्वर (?) रं दमन कालात्मने चक्राय नमः

(इस मन्त्र का पूर्ण स्वरूप एवं विधान अधुना प्राप्त नहीं है)

इन्द्रचक्रास्त्रवर्णनम्

ॐ ज्वलन्नेमि हिमरूपिनवदानवान् कं शोषय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

धर्मचक्रास्त्रवर्णनम्

ॐ पात्यखिल नियमन धर्मात्मने चक्राय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

विष्णुचक्रास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो भगवते तीव्रतेजसे शतसहस्रार परं भिन्धि भीषय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री तत्वोनलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला तेईस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

त्रिशूलास्त्रवर्णनम्

ॐ शूलवराय भीमरूप दारय मारय भीषय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री एकविंशतिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला इक्कीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

ऐषीकास्त्रवर्णनम्

ॐ परमपरसैन्यं विद्रावय क्षिप स्वाहा

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

शिखर्यस्त्रवर्णनम्

ॐ प्रेसन्य वारिणि शिखरि भेदिनि हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

वरुणपाशास्त्रवर्णनम्

ॐ तुन्दिल सर्ववारण घोररूप कवचाय हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कालपाशास्त्रवर्णनम्

ॐ दिफयञ् (?) रिपुं विष्टम्भय विष्टम्भय कवचाय हुं

(इस मन्त्र का पूर्ण स्वरूप एवं विधान अधुना प्राप्त नहीं है)

अशन्यस्त्रवर्णनम्

(आद्या)

ॐ परतलकृ मतिपश्चिम कर शोषय शोषय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

(अपरा)

ॐ परमनोदारण भीषय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

पैनाकास्त्रवर्णनम्

ॐ कर नृ भिन्धि भिन्धि

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला आठ लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

अन्यनारायणास्त्रवर्णनम्

ॐ अन अरा इव सुदर्शन परदारण विश्वमूर्ते कवचाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री पञ्चविंशतिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला पच्चीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

अन्यपाशुपतास्त्रवर्णनम्

ॐ श्लीं पशुं कवचाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

अन्याग्नेयास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो बहुवर्णाय वृत्तपिङ्गललोचन विश्वामित्र प्रशमन दह शोषय भीषय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वात्रिंशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बत्तीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

दयितास्त्रवर्णनम्

ॐ शयखनार वहय प्रक्षेपण कवचाय हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

वायव्यास्त्रवर्णनम्

ॐ नय नय नय यक्षरक्षः पिशाचादीनमित्रांश्च दूरमुत्सारय उत्सारय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टाविंशतिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अट्ठाईस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

क्रौञ्चास्त्रवर्णनम्

ॐ परसन्तापन हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला आठ लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

शक्त्यस्त्रवर्णनम्

(प्रथमा)

ॐ दीप्तमूर्ते परविदारणि कवचाय हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

(द्वितीया)

वज्रमूर्ते शङ्कुकर्णि प्रोतसेने कवचाय हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कङ्कालास्त्रवर्णनम्

ॐ घं कर्माय फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री पञ्चलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला पांच लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मुसलास्त्रवर्णनम्

ॐ चण्डरूप चण्डरूप घातय घातय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री पञ्चदशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला पन्द्रह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कङ्कण्यस्त्रवर्णनम्

ॐ दारिता रते दमय दमय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

वैद्याधरास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो भगवति महामाये कवचायास्त्राय फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

असिरक्तास्त्रवर्णनम्

ॐ खण्डितशत्रुशक्ते कवचाय हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

गान्धर्वास्त्रवर्णनम्

ॐ कलने मोहय मोहय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् |विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

प्रस्थापनास्त्रवर्णनम्

ॐ गन गणपतये लोके अमित्रान् प्रस्थापय प्रस्थापय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सौर्यास्त्रवर्णनम्

ॐ नमः पराय परतेजो निबर्हणाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

दर्पणास्त्रवर्णनम्

ॐ दनवि दररि तदपर कवचाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

शोषणास्त्रवर्णनम्

ॐ शोषित मद्वैरीमानस कवचाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सन्तापनास्त्रवर्णनम्

ॐ तपित परेसयसह समूर्ते सन्तापय सन्तापय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री एकविंशतिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला इक्कीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

विलापनास्त्रवर्णनम्

ॐ सेत्र मायात्मने हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला आठ लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कन्दर्पदयितास्त्रवर्णनम्

ॐ वहोम मायाविन् अस्त्राय फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

पैशाचास्त्रवर्णनम्

ॐ परमोहनि नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला आठ लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

तामसास्त्रवर्णनम्

ॐ न झं झं झं तिमिरकर प्रतिसैन्य संवृणु

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सौमनास्त्रवर्णनम्

ॐ अ ओमद्य शक्ते परस्तम्भन कवचाय हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

संवर्तास्त्रवर्णनम्

ॐ रन् रिपून् क्षिप क्षिप नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मौसलास्त्रवर्णनम्

ॐ तिग्मवृत्ते भिन्धि भिन्धि नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सत्यास्त्रवर्णनम्

ॐ नमः परमार्थाय रिपून् जहि जहि

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मायाधरास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो देवाय मायात्मने हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मदनास्त्रवर्णनम्

ॐ दुर्वार महामाये हुं

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला आठ लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

घोरास्त्रवर्णनम्

ॐ घोररूपाय चण्डाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

अघोरास्त्रवर्णनम्

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोरतर
तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह
वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्

मन्त्री मन्त्रस्यास्यैकपञ्चाशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला इक्यावन लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

अपराघोरास्त्रवर्णनम्

ॐ चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध तप शक्त्यात्मक कवचाय हुं फट्

षड्त्रिंशल्लक्षजपात् सिद्धिः | विपरीतेन रोधः|

इसकी सिद्धि छत्तीस लाख जप से होती है |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सौमास्त्रवर्णनम्

ॐ सनो द्विषन्त उद्वेजय उद्वेजय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

त्वाष्ट्रास्त्रवर्णनम्

ॐ नमः सकल निमतृछा धाम्ने पराय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्वा काण्डानभिमन्त्र्य
चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

शीतेष्वस्त्रवर्णनम्

ॐ शिवफल विपक्षान् क्षिप क्षिप नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मानवास्त्रवर्णनम्

ॐ पराय परमर्यादाभेदिने भीमरूपाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

रौद्रास्त्रवर्णनम्

ॐ दह दह प्रचण्डरूपरुद्रधाम्ने नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

प्रस्वापनास्त्रवर्णनम्

ॐ दीर्घसुसुप्तिकारि ह्रीं हुं फट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सत्यवदस्त्रवर्णनम्

ॐ परिवृत निवर्तित परमेष्ठिन् ऋतं पिब नमः

मन्त्री मन्त्रस्यास्याष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सत्यकीर्त्यस्त्रवर्णनम्

ॐ नमः सत्यधाम्ने शमय शमय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

प्रतीहारास्त्रवर्णनम्

ॐ नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री त्रिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
|विपरीतेन रोधः|

इस मन्त्र को जानने वाला तीन लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे|
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है|

पराङ्गमुखास्त्रवर्णनम्

ॐ परस्तुत स्तोभात्मने पराङ्गमुखाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

लक्षाक्षास्त्रवर्णनम्

ॐ दशलक्षभेदिने निरासकाय निरासकाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री विंशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

विषमास्त्रवर्णनम्

ॐ विचित्रप्रसार मर्षय मर्षय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

दृढनाभास्त्रवर्णनम्

ॐ शान्तिं कुरु निविडगात्र विष्कभ नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

संहारकास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो विसृतचक्राय स्वाहा

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

दशाक्षास्त्रवर्णनम्

ॐ विशलता मुण्डवारणाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

दशशीर्षास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो बहुवक्राय वज्रवारणायान्तं शतवक्रकं द्योरर्सतकर्तनाय दशशीर्षाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुःत्रिंशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौंतीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

शतोदरास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो लुप्तास्त्रजालाय बहूदराय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

पद्मनाभास्त्रवर्णनम्

ॐ परहित प्रवृत्तनाशाय प्रवृत्तनाशाय स्वस्ति

मन्त्री मन्त्रस्यास्याष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

महानाभास्त्रवर्णनम्

ॐ महापाशविचक्रात्मने स्वस्ति

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

दुन्दुनाभास्त्रवर्णनम्

ॐ शमितशूलाय चण्डनाभाय स्वस्ति स्वस्ति

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

धृतिमाल्यस्त्रवर्णनम्

ॐ निसूदिताकुशायानिवारित तेजसे स्वस्ति

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

रुचिरास्त्रवर्णनम्

ॐ क्षुद्यं ई क्षामय क्षामय प्रहरण प्रहरण शं तनोतु नमः

मन्त्री मन्त्रस्यास्याष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

पितृसौमनास्त्रवर्णनम्

ॐ पितृदेवसार सर्वाभयप्रद सर्वशान्तिकराय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री एकविंशतिलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला इक्कीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

विधूतास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो विधूताखिलतापकराय परमधाम्ने

मन्त्री मन्त्रस्यास्याष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मकरास्त्रवर्णनम्

ॐ नमस्त्रुटित शस्त्रास्त्रशक्तये शक्तिशालिने मकराय प्रवृत्तास्त्रमहार्णवभेदिने

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वात्रिंशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बत्तीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

करवीरसमास्त्रवर्णनम्

ॐ नमः तिरस्कृत गदावीर्याय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री चतुर्दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला चौदह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

धनास्त्रवर्णनम्

ॐ नमः प्रतापधन शिवं कुरु शिवं कुरु

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

धान्यास्त्रवर्णनम्

ॐ परार्तजीवातये नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कृशनास्त्रवर्णनम्

ॐ कलिताकाश शरासनाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

नैराश्यास्त्रवर्णनम्

ॐ विफलीकृतचक्र चक्राय वषट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

विमलास्त्रवर्णनम्

ॐ वित्रासिताखिलसत्राय विमलाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

योगन्धरास्त्रवर्णनम्

ॐ सर्वमायीमयास्त्राय तमोबर्हणमूर्तये योगन्धराय महते भीषणाय नमो नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वात्रिंशल्लक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बत्तीस लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

विनिद्रास्त्रवर्णनम्

ॐ निहतनिद्रामुद्राय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

प्रमथनास्त्रवर्णनम्

ॐ नमो विशधीत शतेक्त प्रसादय प्रसादय

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कामरूपास्त्रवर्णनम्

ॐ स्वारप्रवृत्त परसञ्चार भञ्जन स्वाहा

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

कामरुच्यस्त्रवर्णनम्

ॐ नमो निखिलकबन्ध सन्धानाय शिखायै वौषट्

मन्त्रस्यास्य मन्त्री अष्टादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला अठारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

मोहनास्त्रवर्णनम्

ॐ ऐं क्रौं मोहवारिणी नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

आवरणास्त्रवर्णनम्

ॐ धारितमहामाये नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

जृम्भकास्त्रवर्णनम्

ॐ भञ्जभञ्जन स्वस्ति नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री दशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत्
| विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला दश लाख संख्या में जपकर बाणों को
अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सर्वनाभकास्त्रवर्णनम्

ॐ खादितसेना जीवातये नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

भृशाश्वतनयास्त्रवर्णनम्

ॐ वेगविश्वाद्यं वेगजित वैनतेयाय नमः

मन्त्रस्यास्य मन्त्री षोडशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला सोलह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

सन्धानास्त्रवर्णनम्

ॐ सर्वनिर्वापण शं कुरु शं कुरु

मन्त्रस्यास्य मन्त्री द्वादशलक्षसंख्यकं जप्त्वा काण्डानभिमन्त्र्य चालयेत् | विपरीतेन रोधः |

इस मन्त्र को जानने वाला बारह लाख संख्या में जपकर बाणों को अभिमन्त्रित करके सन्धान करे |
मन्त्र को उल्टा जपने से निरोध होता है |

निग्रहप्रयोगवर्णनम्

निग्रह उवाच
निग्रहं कर्म वक्ष्यामि शस्त्राणां सर्वदा कलौ |
उचितानुचितं वेत्तुमुपायं तीक्ष्णसङ्गरे ||०१||
आकाशभैरवे कल्पे प्रोक्तान् शङ्करमानितान् |
देव्यै निग्रहयोगाञ्च तान्सर्वान् प्रवदाम्यहम् ||०२||
गुरुमातृपितृद्रोही स्वभार्यामर्मसूचकः |
यस्तं हन्याद्रणे विप्र दोषो नास्ति कदाचन ||०३||
स्वर्णधान्यगृहक्षेत्रधेनुपुस्तकतस्करम् |
कुरुते यस्तमाहर्तुं दोषो नास्ति कदाचन ||०४||
अभाषमाणं पुरुषं हठात्कारेण ताडयेत् |
यस्तमाहर्तुमीशानि दोषो नास्ति कदाचन ||०५||
भाषमाणाञ्च तान्नारीं ब्रूयात्कोपादवाच्यकम् |
तं नरं देवि संहर्तुं दोषो नास्ति कदाचन ||०६||
वनितां वृन्दमध्यस्थां मानभङ्गां करोति यः |
दुश्चारिणीमपि वधूं बलात्कारं करोति यः ||०७||
दम्पतिमेलने काले प्रकाशं यः करोति च |
नराधमं तमाहर्तुं दोषो नास्ति कदाचन ||०८||
एतद्रहस्यं सुबुधः समीक्ष्य दिव्यास्त्रन्यासञ्च करोति लोके |
स एव नूनं शरभेश्वराज्ञां ज्ञात्वा नरो निग्रहकर्म कुर्यात् ||०९||

निग्रहाचार्य ने कहा - कठोर युद्धकाल में उचित एवं अनुचित का विचार करने के लिए कलियुग में शस्त्रों के निग्रहकर्म को कहता हूँ | ये सब *आकाशभैरवकल्प* के अन्तर्गत शिव जी के द्वारा समर्थित देवी पार्वती के लिए कहे गए हैं, उन सभी निग्रहयोगों को मैं कहता हूँ | हे विप्र ! जो व्यक्ति अपने गुरु एवं माता-पिता से द्रोह करता है तथा अपनी पत्नी पर घातक प्रहार करता है, ऐसे व्यक्ति को जो युद्ध में मार देता है, उस व्यक्ति को कोई दोष नहीं लगता है | स्वर्ण आदि धन, धान्य, घर, खेत, गौ तथा पुस्तक को चुराने वाले व्यक्ति के प्राणों का हरण करने से किसी प्रकार का दोष नहीं लगता है | मौन अथवा तटस्थ व्यक्ति को जो बिना अपराध के ही मारता है, ऐसे व्यक्ति को मारने में कोई दोष नहीं है | हे देवि ! प्रेमपूर्वक वार्तालाप कर रही स्त्री से जो व्यक्ति कठोर वचन बोलता है तथा उसके प्रति अशोभनीय शब्दों का प्रयोग करता है, ऐसे व्यक्ति को मारने में कोई दोष नहीं लगता है | समूह में बैठी हुई स्त्री का जो मान-भंग करता है, जो व्यक्ति व्यभिचारिणी वधू का भी बलात्कार करता है, दम्पति के प्रणयकाल को प्रकाशित करता है, मनुष्यों में अधम ऐसे व्यक्ति का वध करने में कोई दोष नहीं है | बुद्धिमान् व्यक्ति इस रहस्य को भली प्रकार से जानकर ही दिव्यास्त्रों का प्रयोग संसार में करे (अनुचित व्यक्ति और स्थान पर न करे) | ऐसी ही महाशास्ता निग्रहाध्यक्ष भगवान् शरभेश्वर की आज्ञा है | इन सब बातों को जानकर ही व्यक्ति निग्रहकर्म में प्रवृत्त होवे |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता दिव्यास्त्रविमर्शिनी सम्पूर्णा ||

| श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा विरचित दिव्यास्त्रविमर्शिनी पूर्ण हुई |